# अपनी बहुआयामी सांस्कृ

[स्रोत: टाइम्स ऑफ इंडिया]

हाल ही में, **राष्ट्रीय पात्रता प्रवेश परीक्षा (NEET-UG) और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (UGC-NET)** परीक्षा के पेपर परीक्षा से पूर्व ही **डार्क वेब** पर लीक हो गए, जिससे देश भर में विरोध और समस्याएँ उत्पन्न हुई।

## डार्क नेट:

- डार्क नेट **इंटरनेट का एक छिपा हुआ भाग है** जो नियमित सर्च इंजन की पहुँच से परे होते हैं। इसे सिर्फ **टोर (द ओनियन राउटर)** जैसे विशेष ब्राउज़र का उपयोग करके एक्सेस किया जा सकता है।
- इसे **आरंभ में मुख्य रूप से सरकारी और सैन्य उपयोग के लिये सुरक्षित एवं निजता संबंधी संचार की सुविधा के लिये विकसित किया गया था**।
    - हालाँकि, हाल ही में यह **अवैध हथियारों और ड्रग्स** की बिक्री जैसी आपराधिक गतिविधियों से जुड़ गया है।
- डार्क नेट पर **संचार को एन्क्रिप्टेड किया जाता है**, **जिससे प्रेषक और रिसीवर के बीच संचार का कोई संकेत शेष नहीं रह जाता है** , जिससे यूजर के लिये उच्च निजता सुनिश्चित होती है।

**भारतीय कानून के अनुसार डार्क नेट के उपयोग या पहुँच को दंडनीय नही है**, क्योंकि भारत में इसका उपयोग वैध है। **हालाँकि, अवैध उद्देश्यों के लिये इसका उपयोग करना कानून के तहत दंडनीय है**।

## डार्क नेट पर मैलवेयर का खतरा:

- **मैलवेयर डार्क नेट द्वारा विकसित होता है**, जहाँ कुछ प्लेटफार्मों को यह सक्रिय रूप से प्रभावित करता है,**जिससे साइबर अपराधियों को साइबर आक्रमण आरंभ करने के लिये उपकरण उपलब्ध होते हैं**।
    - इसी तरह, यह डार्क नेट वेबसाइटों पर छिपा रहता है, जो वेबसाइटों यूजर को सरफेस वेब की तरह प्रभावित करता है।
- डार्क नेट यूजर अक्सर उपलब्ध विभिन्न प्रकार के दुर्भावनापूर्ण सॉफ्टवेयरों में से **कीलॉगर्स, बॉटनेट मैलवेयर**, **रैंसमवेयर** और फिशिंग मैलवेयर का सामना करते हैं।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/dark-net-2